पद ४७

(ताल-धुमाळी)

हा शैव नव्हें मनुजाधम मूढ तो ऐका। मी सांब नव्हें कोण मी धरी जो शंका।।धु.।। ब्रह्मादिस्तंब जड शक्ति हीच शाळुंका। चैतन्यिलंग शिव अलिप्त माया पंका।। अवकाशरूपिणी कामेश्वरी वामांका। हा वृत्तिप्रवाह गंगाजल भवनौका।। दृग् विषय भोगवी चेतन मी सांब। अंतरी प्रकृति गुण साक्षी मी सांब। जिंग सुषुप्ति लय सुखदाता मी सांब। मत्सन्निधान सत्ता ही विद्या क्षणिका। मज अनंतवेषे सुखवि कुशल जशी गणिका।।१।। हे

पंचभूत मी पंचमुखी शिवराणा। मनप्रवाह चेतवी परि न धरी अभिमाना।। किथ दु:ख भोगि किथ विनोद किर शिवगाना। मनशिशु खेळ खेळोनि येई शिवसदन आत्मनिजसदना।। ईशान रुद्र मृड अष्टमूर्ति मी सांब। भ्रम भस्म चर्चि शिवदीक्षा मी सांब। स्त्री पुरुष सर्व हें जगदंबा आणि सांब।। कैलास देह मी जगदात्मा मग भय कां? भूलिंग ज्ञानमार्ताण्ड सत्य शिव डंका।।२।।